प्रेस विज्ञप्ति

जगदलपुर। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के बीएड भवन में शुक्रवार को भारतीय विज्ञान परंपरा विषय पर विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विज्ञान भारती के संगठन मंत्री श्री विवसवान ने कहा कि हमारे अधिकतर प्राचीन ज्ञान विज्ञान श्रुति में है। प्रकृति के मूल्य का बोध हमारे समाज में है। हम प्रकृति के अनुप्रयोग के लिए एक विधिवत प्रक्रिया अपनाते हैं। हमारे यहां पौधों से भी अनुमति लेकर कार्य करने और उसका उपयोग करने की परंपरा है। यह प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान को दर्शाता है। पर, समय के अनुसार प्रकृति के प्रति समाज की जो भावनात्मक आस्था है वह धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

श्री विवसवान ने कहा कि यदि हमें समाज में व्यापक स्तर पर परिवर्तन लाना है तो सभी प्रकार के विज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने होंगे। प्राचीन ज्ञान व विज्ञान के नैरेटिव के साथ उसके वैज्ञानिक पक्ष को भी सामने लाना होगा। प्राचीन विज्ञान परंपरा को सहेजेने में हम सभी के सहयोग की अपेक्षा है। पत्तल में भोजन करना हमारे समृद्ध विज्ञान परंपरा का प्रतीक है।

श्री विवस्वान ने इस अवसर पर बस्तर संभाग के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के सब्जियों के उपयोग, उसकी पौष्टिकता, उसकी प्रतिरोधक क्षमता इत्यादि को लेकर डेटा संकलन की बात कही। साथ बस्तर संभाग में जल उपयोग एवं उसके संरक्षण की संकल्पनाओं से संबंधित डाटा संकलन को प्रोजेक्ट के रूप में संकलित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के मेडिसिनल प्लांट्स और पारंपरिक सब्जियों में छिपी उपयोगिता को अनुसंधान के माध्यम से सामने लाने की जरूरत है।

इससे पहले विज्ञान भारती के प्रदेश संयोजक वरा प्रसाद कोला ने कहा कि बस्तर के विज्ञान को न केवल संजोने का प्रयास करना है बल्कि उसका बेहतर इश्तेमाल कैसे हो इस बात की ओर भी हमसभी को प्रयास करना है। अपने आभार उद्बोधन में संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि क्षेत्र का प्राचीन ज्ञान यहीं के लोगों तक सीमित न रहे। इसे हम सभी को उपयोग में लाना है। यहां की सब्जियों को आधुनिक आहार में लें तो बेहतर हो। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बीएल साहू ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी सहित अन्य उपस्थित थे।